# सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
# दिनांक 11 अक्टूबर 2015 (धुरपद धाम, दुर्गापुर)

**राधास्वामी।**

**कामी तरे क्रोधी तरे, पापी तरे अनंत।**
**आन–उपासक कृतघ्न, तरे ना नाम रटंत।।**

कामी भी तर जाते हैं, क्रोधी भी तर जाते हैं, पापी भी तर जाते हैं (वाल्मीकि डाकू था, वो भी तर गया) लेकिन दो तरह के आदमी नही तरते हैं, आन–उपासक और कृतघ्न। आन उपासक उसको कहते हैं जो मालिक और अपने को दो समझता है। वो नही तरता है, क्यों? क्योंकि वो मालिक को ढूँढने के लिए केदारनाथ जाता है, हरिद्वार जाता है, अमरनाथ जाता है, वैष्णो देवी जाता है। अब बताओ वो कैसे तरेगा? जबकि मालिक तो उसके अंदर है। उसने मालिक को और अपने को दो समझ लिया कि मैं अलग हूँ और मालिक केदारनाथ, अमरनाथ में बैठा है, वो कभी नही तरेगा।

**प्रेम गली अति सांकरी, जा में दो ना समाई।**

प्रेम गली इतनी तंग है कि उसमें दो नही आ सकते हैं, एक होना पडेगा उस मालिक के साथ। तो हमेशा याद रखो अगर मैं अपने को और उस मालिक को दो समझता हूँ, तो मैं कभी भी मालिक को नही पाऊँगा।

**ढूँढ मुझको अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूँ।**
**ना मैं मथुरा, ना मैं काशी, ना गिरि कैलाश हूँ।।**
**तेरे ह्रदय में बसा रहता हूँ, निसंदेह आप।**
**राधा स्वामी ने बताया, लागी तुझसे लग्न।।**

मालिक खुद कह रहा है, ना मैं मथुरा हूँ, ना मैं काशी हूँ और ना मैं मथुरा में रहता हूँ, में तो तेरे ह्रदय में रहता हूँ। तुम अपने अंदर ढूँढों, मैं मिल जाऊँगा। अगर तू मुझे ढूँढने केदारनाथ जाएगा, तो पानी की एक लहर आएगी और तुझको बहा ले जाएगी। इसीलिए मुझे ढूँढने कहीं नही जाना है, अपने घर में बैठकर ही मुझे अपने अंदर ढूँढना है और तुम्हें मालिक मिल जाएगा। कबीर साहब कहते हैं–

**जिन खोजा तिन पाया, गहरे पानी पैठ।**
**मैं अभागिन डूबन डरी, रही किनारे बैठ।।**

मैंने जब मालिक को अपने अंदर खोजा, वो मुझे मिल गया और जब मैं अंदर जाने से डर गई, अपने ही विचारों में खोई रही तो मालिक नही मिला।

जापान में समुद्र की तह में मोती मिलते हैं। वहाँ की लडकियाँ बहुत होशियार हैं, वे 2–3 मिनट के लिए साँस बंद करती हैं, समुद्र में डुबकी लगाती हैं और समुद्र की तह से मोती निकाल कर ले आती हैं। अब मोती किसको मिला, जिसने डुबकी लगाई, और जो डूबने से डर गई, किनारे पर ही बैठी रही, उसके हाथ कुछ नही आएगा। इसीलिए खोजो जरूर मिलेगा, वो अपने अंदर ही मिल जाएगा। अगर तुम बद्रीनाथ, केदार नाथ जाओगे तो वो नही मिलेगा क्योंकि वहाँ पत्थर और पानी है। ये सब भेड चाल है, कोई अपनी श्रद्धा और विश्वास से वैष्णो देवी गया और उसका काम हो गया और वो वेवकूफ, नासमझ समझने लगा कि पत्थर और पानी ने मेरा काम कर दिया। फिर सारे शहर में खबर फैल गई कि वो वैष्णो देवी गई और उसका काम बन गया, फिर चलो जी चलो वैष्णो देवी चलते हैं, उसकी मन्नत पूरी हो गई, हमारी भी मन्नत पूरी हो जाएगी। अब जरा आप आपने दिमाग में सोचो लाखो आदमी जाते हैं वैष्णो देवी, क्या सबकी मन्नते पूरी हो जाती है? नही होती, अगर सबकी मन्नते पूरी हो जाती तो अब तक ये शहर स्वर्ग बन गया होता। इसीलिए अगर

आपके मन में श्रद्धा और विश्वास है तो आपकी मनोकामना घर बैठकर ही पूरी हो जाएगी। क्यों? क्योंकि वैष्णो देवी, अमरनाथ जाकर भी आपका मन ही काम करता है और घर में बैठकर भी आपका मन ही काम करेगा, तो फिर वैष्णो देवी जाकर क्यों धक्के खाओ। ये सारा काम अपने ही मन का है, ना वैष्णो देवी का है, ना केदारनाथ का है, ना अमरनाथ का है। लोग काँवड लेने जाते हैं, वहाँ से पानी लाते हैं फिर शिवजी पर चढाते हैं, ये सब भेड चाल है। रास्ते में गाँजा, चरस पीते हैं और अब तो पैसे भी माँगते हैं, इस तरह अपने ऊपर कर्मों का बोझ और बढा लेते हैं। फिर क्या फायदा हुआ काँवड लाने का, जो काम होगा अपने मन से होगा और घर बैठे ही हो जाएगा।

गुरू किसलिए आता हे संसार में? गुरू चमत्कारी बाबा नही है, कि जादू से तुमको सोने की चैन और अंगूठी बना कर दे दी। जो जादू से सोने की चैन बनाते हैं, वो पाखंडी बाबा होते हैं। सच्चा गुरू आता है तुमको सच्चा ज्ञान देने के लिए और यही काम है गुरू का। क्यों? क्योंकि तुम बिना ज्ञान के संसार में भटक रहे हो। तुमको पता नही है, संसार में सच क्या है और झूठ क्या है? तुम झूठ को सच समझकर पकडे रहते हो और जीवन भर दुखी रहते हो। गुरू तुमको ज्ञान देता है फिर तुमको समझ आती है कि संसार में सच क्या है और झूठ क्या हैं। तुम रास्ते में जा रहे होते हो और तुमको कोई कीडा सा दिखता है और तुम साँप–साँप करके चिल्ला रहे होते हो, फिर पीछे से एक आदमी आता है और टार्च जलाता है और जिसे तुम साँप समझकर डर रहे थे, वो तो रस्सी का एक टुकडा था। अब टार्च दिखाने वाला आदमी कौन था? वो था गुरू। गुरू ने तुमको ज्ञान दे दिया कि ये रस्सी है, तू इससे मत डर। अब ज्ञान क्या है? ज्ञान कोई लंबी–चौडी चीज नही है कि तुम रामायण पढो, महाभारत पढो। ज्ञान सिर्फ छोटी सी बात है, कि संसार में सच क्या है और झूठ क्या है। बस इतना ही ज्ञान है, हम अपनी इन दो आँखों से जो भी चीज देखते हैं, वो सब झूठ है, नाशवान है, बस यही ज्ञान है। काठमाण्डु शहर एक झटके में खत्म हो गया। मैं 4 साल का था, मेरी माँ मुझे छोडकर चली गई। मेरी पत्नी थी, मैं उससे बहुत प्रेम करता था, अभी कुछ साल पहले वो भी मुझे छोडकर चली गई। इसीलिए हम इन दो आँखों से जो भी कुछ देखते हैं वो सब झूठ है। अब सच क्या है? सच हम इन दो आँखों से नही देख सकते, सच देखने के लिए हमें तीसरी आँख जिसे शिव नेत्र कहते हैं, खोलनी पडेगी। सच है– मालिक। जो हमारा साथ कभी नही छोडता, दुख में, सुख में हमेशा हमारी देखभाल करता है। अगर हमारे पास कोई दुख आ गया तो ये मत समझना कि हमारे पास दुख क्यों आया? हमारे पास दुख इसलिए आया कि मालिक ने आपको याद दिलाया है कि इस संसार में दुख भी हैं, भूलना मत। इस संसार में सुख भी है, दुख भी है। अगर आपको इस संसार के सुख और दुख से बचना है तो वैराग होना पडेगा। इस संसार से दुखी होना पडेगा। जो इस संसार से दुखी हो जाता है वो मालिक के नजदीक पहुँच जाता है। अगर हमारी जिंदगी में दुख आता है तो उसका कोई कारण जरूर है, वो हमारी अच्छाई के लिए ही आता है। अगर हमारी जिंदगी में कोई दुख आए तो कभी घबराना नही। जब आप सुख से नही डरते हो तो दुख से क्या डरना। ये संसार द्वंद का बना है, आप सुख से नही डरते हो, खुशी से नही डरते हो, तो फिर दुख से क्यों डरते हो? ये समझो सुख भी मालिक ने दिया है और दुख भी मालिक का दिया है। जब आपने सुख स्वीकार किया तो आपको दुख भी स्वीकार करना पडेगा, और जब आप दुख स्वीकार करते हो तो फिर आपको सुख भी स्वीकार करना पडेगा। आप ये नही कह सकते कि मुझे सुख ही सुख चाहिए, अगर आपको सुख चाहिए तो आपको दुख के लिए भी तैयार रहना होगा, तभी आप संसार में रह सकते हो।

जब हुजूर शब्दानंद जी महाराज किसी को नाम दान देते थे तो कहते थे कि 15 मिनट से ज्यादा ध्यान नही करना। क्यों? क्योंकि वो जानते थे कि ये अगर 2 घण्टे ध्यान में बैठा तो इसको अंदर का रास्ता नही मिलेगा और ये भटक जाएगा। हमारे गुरू जी किसी को ध्यान में बैठने के लिए कहते ही नही थे, वो कहते थे–

**आँख ना मूँदू, कान ना रूदूँ, काया कष्ट ना धारू।**
**खुले नयन मैं हँस–2 देखूँ, सुंदर रूप निहारू।।**

वो कहते थे तुम आठो पहर खुले नयन से अभ्यास करो। कैसे? हर समय अपने गुरू का ध्यान करो, तुम रोटी बनाओ, खाना खाओ, चाहे जो भी काम करो, लेकिन हर समय ध्यान गुरू का रखो। ये तुम्हारा 24 घण्टे का ध्यान हो जाएगा और कबीर साहब भी यही कहते हैं– कि खुले नयन से ध्यान, भजन करो। जब हम आठो पहर ध्यान करते हैं तो एक समय ऐसा आ जाता है कि हमारी सुरत एकदम ऊपर चढ जाती है, ध्यान में बैठना नही पढता। हमारे गुरू झूठ नही बोलते थे, उन्होने एकदम सही रास्ता बताया। बातचीत करते हुए, खाना खाते हुए, लेटे हुए, हमेशा गुरू का ध्यान करो। कई बार ऐसा हुआ है कि कोई औरत आटा गूँथ रही है और आटा गूँथते–2 उसकी सुरत एकदम ऊपर चढ गई। हुआ है ऐसा कई बार, लेकिन ये इतना खतरनाक नही है, 3 घण्टे वाला जो बैठकर अभ्यास करना है, यें खतरनाक है। क्यों ? क्योंकि वो अंदर रास्ता भूल जाता है और बिना गुरू कें मार्ग दर्शन के वो पागल भी हो सकता है।

आप इस संसार की कोई भी वस्तु वहाँ (मालिक के दरबार मे) नही ले जा सकते। आप यहाँ जो कुछ भी कमाओगे, वो आपको यहीं छोडना पडेगा। खाली हाथ आए थे और खाली हाथ जाना पडेगा। लेकिन खाली हाथ नही जाएंगे कुछ तो ले जाएंगे। क्या ले जाएंगे? अगर आप किसी प्यासे को पानी पिलाओगे, वो साथ जाएगा। अगर तुम किसी भूखे को खाना खिलाओगे वो साथ जाएगा। अगर तुम किसी नंगे को कपडा पहनाओगे, वो साथ जाएगा तुम्हारे। बाकी सब यहीं रह जाएगा।

**दौलत दुनिया माल खजाने, बंधिया बैल चराई।**

कोल्हू का बैल सारे दिन हल में चलता है और शाम को वहीं का वहीं। इसी तरह लाखों करोडों जन्म हम मरे है, जिये हैं, फिर वही पापड बेल रहे हैं। क्या कमाया हमने? अब जो ये जन्म हमको मिला है, ये एक अवसर है, ये फिर नही आने वाला, उसमें तो कुछ करो, कुछ कमाओ, जो साथ ले जाओगे। अगर दुनिया के माल खजाने के पीछे पढ गए तो फिर से जन्म। दौलम कमाओ, दौलत तो बहुत जरूरी है, दुनिया के सभी काम दौलत से होते हैं, लेकिन दौलत ईमानदारी से कमाओ और ईमानदारी से खर्च करो। घर में टी. वी. रखो, कार रखो, फ्रीज रखो, लेकिन मन में ये रखो कि ये मेरा नही है, सब कुछ यहीं रह जाएगा। हम सोचते हैं हमारे बेटे के काम आएगा, अरे! अगर बेटा सपूत है तो उसके लिए धन छोडने की जरूरत ही नही है। वो खुद तुमसे ज्यादा धन कमा लेगा। अगर बेटा कपूत है तो आप उसके लिए कितना भी धन छोड दो वो सबको खर्च कर देगा, शराब में और जुए में। इसलिए तुम क्यों चिंता करते हो सबका अपना भाग्य है, वो अपने भाग्य से धन कमाएंगे और सब कमाते ही हैं। हमारे बेटे हमसे ज्यादा धन कमाते हैं। सब अपना–2 भाग्य लेकर आते हैं, तुम अपने भाग्य से अलग किसी को एक रूपया नही दे सकते हो और उसके भाग्य का एक रूपया भी नही ले सकते हो। सब अपने भाग्य से कमाएंगे, सब अपने भाग्य से खर्च करेंगे।

एक लडका था, वो कॉलेज में पढता था। उसके पिता ने उसको खुला खर्च दे रखा था। अब उस लडके के पास पैसा रहता, तो वो सिनेमा देखने लगा, अब सिनेमा में कितना पैसा खर्च होता है? फिर वो शराब पीने लग गया, शराब में भी 500–600 रू0 खर्च होते, फिर वो ड्रग्स लेने लगा। ड्रग्स का तो कोई अंत ही नही है। ऐसे धीरे–2 उसमें सारे ऐब लग गए और एक दिन वो जेल पहुँच गया। अब आप इसको क्या कहोगे? हम इसको कहेंगे कि ज्यादा पैसा भी खतरनाक है। कबीर साहब कहते हैं–

**प्रभु धन उतना दीजिए, जा में कुटुम्ब समाये।**
**मैं भी भूखा ना रहूँ, साधू ना भूखा जाए।।**

कबीर साहब कहते हैं– प्रभु आप मुझें इतना धन दे दीजिए जिसमें मेरे बच्चों की पढाई–लिखाई हो जाए, उनका कोर्स हो जाए, शुबह– शाम का भोजन मिल जाए और अगर कोई अतिथि आ जाए तो उसका सत्कार हो जाए। अगर कोई बीमारी हो जाए तो उसके ईलाज के लिए पैसा आ जाए। बस इतना ही धन दीजिए। ज्यादा धन की मुझे लालासा नही है, क्योंकि ज्यादा धन आएगा तो बुराईयाँ भी साथ लाएगा। अंग्रेजी में कहावत है–Cut your coat according to cloth, हम सोचते हैं कि शहर में सबसे बडा बंगला हमारा होना चाहिए, सबसे बडी कार हमारी होनी चाहिए। चलो जी ठीक है शहर में सबसे बडी कार आपके पास है, फिर क्या हुआ? आपने क्या कमा लिया? आपने कुछ नही कमाया। एक बार क्या हुआ मैं हाईवे पर मोटरसाईकिल से जा रहा था, आगे ट्रैफिक वाले ने हाथ दिया, मैंने गाडी में ब्रेक लगा दी। मेरे पीछे एक लडका कार चला रहा था, उसने कार को मेरी बाईक में ठोक दिया और मैं गिर गया, बाईक मेरे ऊपर गिर गई। अब वो लडका कार से निकला, मैंने सोचा मुझे उठायेगा, लेकिन वो अपनी कार को हाथ लगा–लगा कर देख रहा था, कहीं स्क्रैच तो नही आई। तो उसको अपनी कार से मोह था, कार का क्या मोह करना? कभी एक ट्रक आएगा और कार को ठोक देगा, फिर कैसा मोह? मैं आपको ज्ञान दे रहा हूँ कि इस संसार की किसी भी वस्तु पर विश्वास मत करना क्योंकि इस संसार की हर वस्तु नाशवान है, और उसकी कोई गारंटी नही कि कब साथ छोड जाए। आप कार रखो, उसे चलाओ, लेकिन मोह मत करो क्योंकि ये संसार की वस्तु है और कभी भी मेरे हाथ से निकल जाएगी। अगर आपके बटुए में 10,000 रू0 है और वो कहीं गिर जाता है तो कभी दुख मत करना। ये समझना कि वो मेरे पैसे नही थे, वो किसी और के पैसे थे और उसी को मिल गए। मुझसे कई बार 10–10 हजार रू0 गिरे हैं, मैंने कभी दुख नही किया। मैंने यही सोचा कि वो पैसे मेरे नही थे, जिसके थे, उसी के पास पहुँच गए। ईमानदारी की बात यही है कि जो पैसा गया, वो आपका नही था, उसके ऊपर रोने का कोई फायदा नही है। जो आपके पास है, उसको संभालो, वही आपका है। तो गुरू आता ही है आपको संसार में ज्ञान देने के लिए और गुरू जो ज्ञान देता है वो बहुमूल्य है, उसका कोई मोल नही है। अगर गुरू की एक बात भी आपके दिमाग में बैठ गई तो उसका आप मोल नही लगा सकते, वो आपके लिए खजाना है, उस खजाने का संसार में कोई मोल नही है। तो गुरू आता ही इसलिए है संसार में, कि आपको ज्ञान दे और आपको ऊपर उठा दे। कहाँ से? इस संसार से। संसार से ऊपर उठा देने का मतलब क्या हुआ? इसका मतलब है कि आपको लगेगा कि मैं संसार के और लोगो से अलग हूँ, यहाँ जितने भी लोग हैं मैं उन सबसे अच्छा हूँ। क्यों? क्योंकि मुझमें समझ है, अच्छा क्या है, और बुरा क्या है, सच क्या है और झूठ क्या है, इसलिए मैं इन सबसे अलग हूँ। इसी को बोलते हैं संसार से ऊँचा उठाना और आप इस संसार के सब लोगो से ऊपर उठ जाते हो, क्योंकि तुम्हारे पास ज्ञान है।

!! राधा स्वामी !!